सृष्टि और आप

हम अपनी ज़िन्दगियों की क्या क़ीमत लगा सकते हैं ?

मनुष्य के शरीर में भाग एक डॉलर की क़ीमत में खरीदे जा सकने

वाले रासायनिक पदार्थ पाए जाते हैं।

मैकडॉनल्डस् में लिए गए लंच की क़ीमत इससे भी ज़्यादा होती है !

लेकिन क्या हमारा मूल्य केवल इतना ही है ?

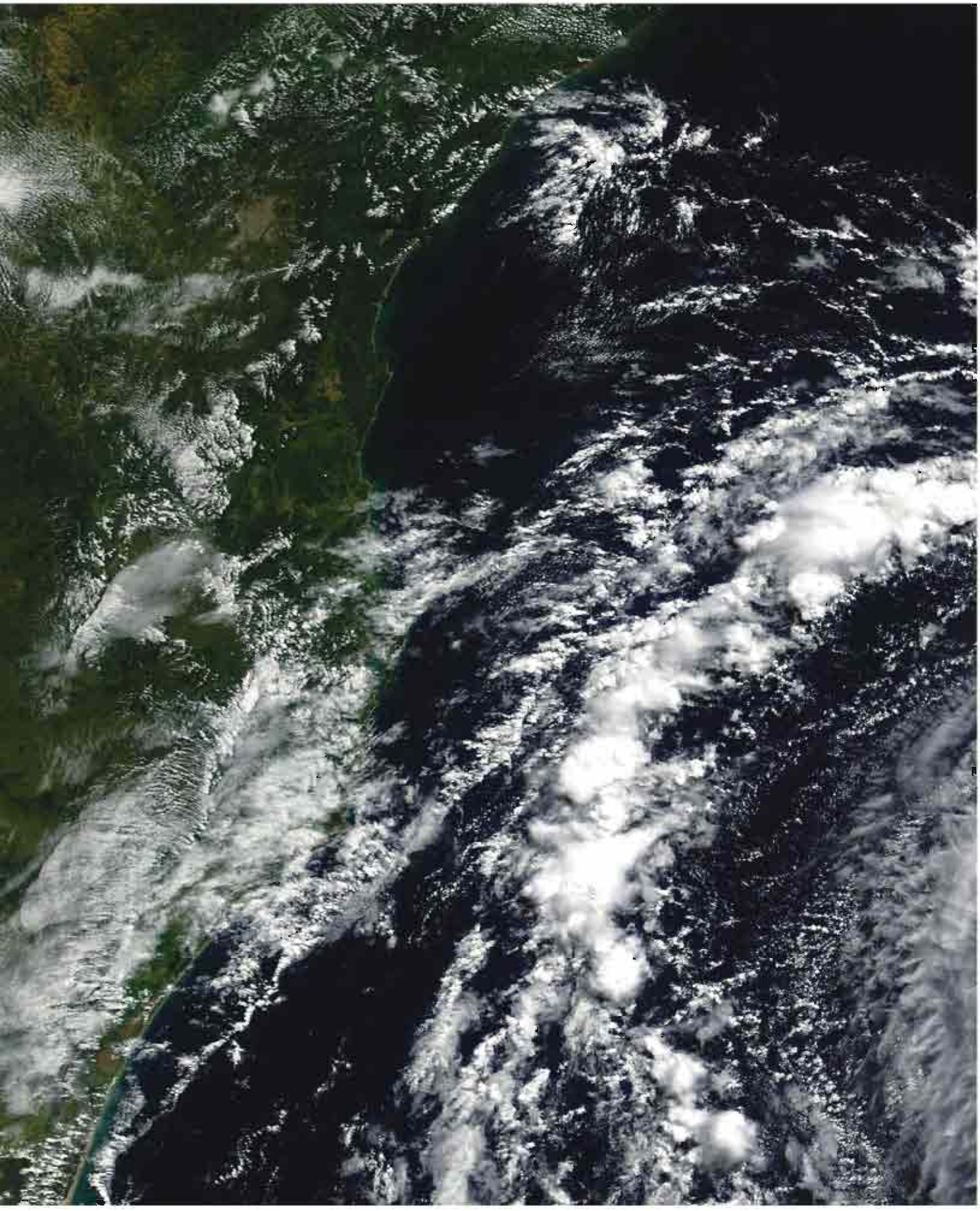

एक नज़ारा

हम अपनी ज़िन्दगियों की क्या क़ीमत लगा सकते हैं ? मनुष्य के शरीर में मात्र एक डॉलर की क़ीमत में खरीदे जा सकने वाले रासायनिक पदार्थ पाए जाते हैं। मैकडॉनल्डस् में लिए गए लंच की क़ीमत इससे भी ज़्यादा होती है ! लेकिन क्या हमारा मूल्य केवल इतना ही है ? महान विचारक फ्रांसिस शॅफ़र एक भेंटवार्ता में कहते हैं :

''मनुष्य पहिये की तीली के समान अर्थात् ऐसा प्राणी नहीं है जिसका कोई महत्व न हो ..... वह रंगशाला का एक हिस्सा ही नहीं है; मनुष्य वास्तव में इतिहास को बदलकर रख देने की क्षमता रखता है''।

लेकिन, हमारी असली क़ीमत क्या है ? जब एक दाम लगाने वाला ज़मीन-जायदाद के दाम लगाता है तो अपने दिमाग में हमेशा पहले से ही सोच लेता है कि इस जायदाद का ''उच्चकोटि का और बेहतरीन इस्तेमाल'' कैसे हो सकता है। वास्तव में हमारी क़ीमत इस बात पर निर्भर करती है कि क्या हम सृष्टि में बसे धूल के कणों से अकस्मात् घटी किसी घटना का उत्पाद हैं या ख़ास तौर से हमारी रचना की गई है।

यदि हम मात्र किसी आकस्मिक घटना का परिणाम हैं तो सृष्टि के उद्देश्यों को पूरा करने में हमारा कोई मतलब नहीं है, हम बेकार हैं। फिर भी, यदि इस पूरी सृष्टि की रचना पहले से ही दिमाग में हमें रखकर, एक योजना के तहत की गर्द है तो हमारी क़ीमत बहुत ज़्यादा है।

हम सृष्टि की उस मीनार के समान खड़े हुए हैं, जिसको बनाने में बहुत ही ज़्यादा समय की खपत रही है और जिसमें रोंगटे खड़े कर देने वाली हैरतअंगेज़ जटिलताएं शामिल हैं। केवल सृष्टि की इस रचना में मनुष्य ही ऐसा हिस्सा है जो यह प्रश्न पूछ सकता है : ''कि हमारा यहाँ क्या काम ?''

हमने देखा है कि हमारी सृष्टि में कुछ अन्य अतिरिक्त विमाएं भी हो सकती हैं। परन्तु हमें यह व्यक्तिगत तौर पर कैसे प्रभावित करता है ? क्या जीवन के सन्दर्भ में हमारा यह केवल एक ही नज़ारा या दृश्य है या भविष्य में ऐसा भी कोई अवसर मिल सकता है कि हम किसी दूसरी विमा में जाकर रहें ? क्या हमें दूसरा अवसर मिल सकता है ?

फिल्म 'बैक टू द फ्यूचर' में नौजवान माइकेल जे. फॉक्स 1980 के एक ऐसे किशोर बालक की भूमिका अभिनीत करते हैं जिसे डीलॉरियेन टाइम मशीन के द्वारा 1955 के समय काल में पहुंचा दिया जाता है। और उस भूतकाल में मार्टी मैक्फलाई नामक जो चरित्र है, अपने माता-पिता पर इस बात का दबाव डालता है कि वे प्यार करें और शादी करें ताकि वह परिणामस्वरूप पैदा हो सके।

यह एक बहुत बढ़िया कहानी है जो रोमांस और हास्य से भरपूर है, हालांकि हक़ीकत में समय की यात्रा करना अर्थात् अतीत में या आने वाले कल में चले जाना प्रायः एक कल्पना मात्र है। स्टीफेन हॉकिन्स विज्ञान की काल्पनिक कहानियों के चहेते पाठकों को जो काल्पनिक उड़ानों में बहे जा रहे हैं, उन्हें संयम बरतने की सलाह देते हुए काल-यात्रा के बारे में चर्चा करते हुए कहते हैं :

''इन सब बातों के पश्चात्, ऐसा लगता है, कि क्वाण्टम सिद्धान्त समय की यात्रा को सूक्ष्मदर्शी पैमाने पर जांचने की अनुमति देता है। हालांकि, विज्ञान की काल्पनिक कहानियों को गढ़ने के उद्देश्य को पूरा करने में इसका कोई ख़ास इस्तेमाल नहीं है, जैसे कि अतीत में जाना और अपने दादा जी का कत्ल कर देना''।

चाहे हम किसी दूसरी विमा में चले जाएं या समय की यात्रा का दौर पूरा कर लें, ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि पृथ्वी पर अपने जीवन को एक बार पूरी तरह से जी लेने के अनुभव को दोबारा दोहराने योग्य हम हो जाएंगे। ऐसा लगता है, कि हमको जीवन का यह नज़ारा देखने का अवसर केवल एक बार मिलता है और यह वह हक़ीकत है जो हमारे यहां होने की वजह को और रोमांचक बनाकर हमारे सामने पेश करती है।

इससे पहले कि हम इस वजह पर प्रश्न उठाएं और जीवन के सन्दर्भ में इसका अर्थ खोजें, आइए, जो कुछ भी हमने सृष्टि के बारे में खोज निकाला है, उसे जल्दी-जल्दी दोहरा लें।

इन सबके पीछे छुपा अनोखापन

अध्याय एक की शुरुआत हमने यह अच्छी तरह पता लगाने के लिए की कि हमारी यह अद्भुत सृष्टि ऐसे कितने आश्चर्यों से भरी हुई है जो हमारी कल्पनाशक्ति को हिलाकर रख दें। अद्भुत क्वासरों, शक्तिशाली अन्धकूपों, शानदार अज्ञात पदार्थों, रहस्य से भरपूर अज्ञात ऊर्जा और विस्फोटक सुपरनोवाओं ने रहस्यों पर पड़े पर्दों को उतार डाला है और ऐसी शक्ति को हमारे सामने ला खड़ा किया है जो हमारे समझने की योग्यता से परे है, और इस तरह से हमारे अंतरिक्ष यान रूपी उपग्रह पृथ्वी को बौना एवं छोटा साबित कर दिया है। हमें तो इस बात की हैरानी है कि बाइबिल की यह धारणा कि सृष्टि की उत्पत्ति किसी पदार्थ से नहीं हुई है, लोगों के बीच जाने जानी लगी है और बहुत दिनों तक वैज्ञानिक इस धारणा को अपना आहार नहीं बना सके।

अध्याय दो में हम क्वाण्टम यांत्रिकी ..... जो एक ऐसा संसार है जिसने अल्फ्रेड आइन्स्टीन को भी भौंचक्का कर दिया, की अनोखी अनिश्चितताओं की बड़ी गहराई से जांच पड़ताल कर चुके हैं। हम एक ऐसी सृष्टि की ओर भी निहार रहे हैं जो कि शायद अपने अन्दर 10 या इससे भी ज़्यादा आयामों को समेटे हुए है, जो आश्चर्यकर्मों को सम्भव बना रही है और वैज्ञानिकों को ''बक्से के बाहर जाकर सोचने'' पर विवश कर रही है।

उसके बाद हम यह जानकर हैरान रह जाते हैं कि विश्व के बहुत सारे वैज्ञानिक जीवन के इस बेहतरीन ताल-मेल के प्रति अपनी प्रतिक्रिया एक विशिष्ट बौद्धिक क्षमता वाले व्यक्तित्व के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करके और ईश्वर ..... और जीवन के प्रति उसकी योजनाओं के बारे में बात करके ज़ाहिर कर रहे हैं।

अध्याय तीन में हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि जीवन की उत्पत्ति एक आकस्मिक घटना का परिणाम है, इस बात की सम्भावना चक्रवात में दुर्घटनाग्रस्त हुए हवाई जहाज, के कबाड़खाने में पड़े हुए कल-पुर्जों से अच्छी तकनीक से विकसित बोइंग 747 विमान बना लेने की तुलना में कहीं ज़्यादा कम है।

और डी एन ए के सह- अनुसन्धान कर्त्ता या खोजकर्त्ता, डां. फ्रांसिस क्रिक इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि इसकी (जीवन) उत्पत्ति सिर्फ़ संयोग से होने की सीमा से बाहर की बात है, और

इसकी उत्पत्ति मूल रूप से पृथ्वी पर नहीं हो सकती है। डी एन ए की जटिलताओं ने क्रिक को इतना हैरान कर दिया कि, प्रकृतिवादी होने के कारण, उन्होंने अपने विचारों और दृष्टि का रुख मोड़कर जवाबों की खोज में बाहरी अन्तरिक्ष की ओर निहारना शुरु कर दिया हालांकि वह इसकी उत्पत्ति के पीछे किसी महाशक्ति के होने की बात को बड़ी ही अनिच्छा से स्वीकार कर रहे थे।

अध्याय चार में हमें मानव नेत्र और उसके 1000 लाख खरब से भी ज़्यादा जोड़ने वाले संयोजक तन्तुओं की हैरान कर देने वाली जटिलता भय के घेरे में ला खड़ा करती है और यहां हम पाते हैं कि एक प्रमुख जैव रसायन शास्त्री मानव नेत्र के बहुत ही ज़्यादा, उच्च स्तर के पेचीदे मशीन के समान कार्य करने वाले भागों की ओर अचरज भरी दृष्टि से देख रहे हैं। इस अध्याय में हमें आंख की अद्भुत जटिलता से डार्विन को स्वयं जो उलझन पैदा हुई, उसकी जानकारी मिलती है। आंख, एक ऐसा अंग जिसने उन्हें इतना परेशान कर दिया कि उन्होंने मान लिया कि वे ''दहल गए हैं''।

इसके पश्चात् हमें गणितज्ञों और अणु जैव वैज्ञानिकों द्वारा पेश की गई बड़ी गम्भीर एवं ज़बरदस्त चुनौतियों की जानकारी मिलती है, जिसका सम्बन्ध डार्विन के समष्टि जैव विकास के सिद्धान्त की प्रयोगात्मक क्षमता से है, और ये चुनौतियां बयान करती हैं कि इस सिद्धान्त को ज़्यादा समय तक सुरक्षित नहीं रखा जा सकता और इसमें वैज्ञानिक प्रमाणों की कमी है।

और, बहुत से प्रमुख जीवाश्म वैज्ञानिकों ने इस बात को मान लिया है कि डार्विन द्वारा बताये गए बदलती हुई नस्लों वाले जीवाश्मों की खोज अभी भी नहीं हो पायी है ..... जो डार्विन के समष्टि जैव विकास के सिद्धान्त को प्रति गहरे सन्देह का जन्म देता है।

हमने अणु जैव वैज्ञानिक माइकेल डेन्टन को भी गहराई से देखा-परखा है जो 'एवॉल्यूशन : अ थ्योरी इन क्राइसिस' में इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि :

''डार्विन के विकासवाद का सिद्धान्त ..... बीसवीं शताब्दी की खगोल-शास्त्र से सम्बन्धित सबसे बड़ी काल्पनिक घटना है''।

अन्त में, नतीजे के तौर पर ब्रिटिश म्यूज़ियम और इसके डार्विन केन्द्र के भूतपूर्व और वरिष्ठ जीवाश्म वैज्ञानिक, डॉ. कॉलिन पैटरसन, वर्ष 1981 में अमेरिकन म्यूज़ियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री में अपने दिये गए एक भाषण में डार्विन के विकासवाद पर अपनी भावनाओं को सारांश रूप में व्यक्त करते हैं,

''यह एक सदमा सा लगने वाली बात है कि कोई व्यक्ति इतने लम्बे अर्से तक भटकाव की स्थिति का सामना करता रहा हो .....''।

लेकिन, ये बातें हमें कितनी दूर तक ले जाती हैं ? आइए, सृष्टि के इस बेहतरीन ताल-मेल और समष्टि जैव विकास की असफलता के परिणामस्वरूप जो उलझने पैदा हो रही हैं उससे किसी नतीजे पर पहुंचें :

1. यदि समष्टि जैव विकास एक काल्पनिक घटना है, और यदि सृष्टि और पृथ्वी को जीवन को जीवित रखने के लिए बेहतरीन ताल-मेल से बनाया गया है तो जीवन का पाया जाना सिर्फ़ एक घटना नहीं है।
2. यदि जीवन का पाया जाना सिर्फ़ एक घटना नहीं है, तो विकल्प के रूप में इसका जो तर्कपूर्ण विकल्प है, वह यह है कि इसको किसी योजनाबद्ध तरीके से किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए रचा गया था।
3. यदि मनुष्य सृष्टि की रचना का सबसे अभिन्न रूप है तो हमारी रचना अवश्य ही किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की गई है।

यदि हमारे अस्तित्व के पाए जाने के पीछे कोई उद्देश्य छुपा है तो हम उस उद्देश्य को कहां खोज सकते हैं ? हालांकि वैज्ञानिकों ने सृष्टि के व्यवहार को जानने के लिए काफी महत्वपूर्ण खोजें की हैं, परन्तु उन्होंने ऐसी किसी भी बात पर से पर्दा नहीं उठाया है जो हमारे पाए जाने के अर्थ और महत्व पर रोशनी डाल सके या उसे पूरा कर सके । महान् साहित्यकार और बुद्धिजीवी टॉल्सटॉय इसका कारण खोजते हुए कहते हैं :

''विज्ञान इस मामले में बेकार साबित हुआ क्योंकि यह हमारे प्रश्न का उत्तर नहीं देता है, और केवल यही एक प्रश्न है जो हमारे लिए महत्वपूर्ण है, कि हमें क्या करना चाहिए और हमें कैसे जीवित रहना चाहिए ?''

तब भी, कुछ लोग ऐसे हैं जो इस बात का चुनाव करते हैं कि उन्हें पाए जाने के अर्थ की खोज नहीं करनी है और इसके बजाय वे इस उपग्रह पृथ्वी पर अपने तरीके का जीवन जीना पसन्द करेंगे; सांसारिक सुखों की तलाश में और मनुष्य केन्द्रित जवाबों की तलाश में।

ईश्वर में विश्वास न करने वाले नास्तिक और खुलकर बोलने वाले विकासवादी विचारधारा को मानने वाले रिचर्ड डॉकिन्स डार्विन की प्रकृतिवादियों से की गयी प्रार्थना का वर्णन करते हुए कहते हैं :

''गहरी और बड़ी-बड़ी समस्याओं का सामना करते समय हमें ज़्यादा दिन तक अन्धविश्वासों का सहारा नहीं लेना है जैसे कि : क्या जीवन का कोई अर्थ है ? हम किसलिए यहां मौजूद हैं ? मनुष्य है कौन ?''

दूसरे अन्य लोग जैसे कि कार्ल सागान ज़मीन पर रहने वालों में कुछ ज़्यादा ही विशिष्टताएं पा लेने के कारण, ज़्यादा ही आकर्षित हो जाते हैं और जिसकी वजह से वे महसूस करते होंगे कि, ''प्राणी बहुत ज़्यादा बुद्धिमान हैं, बहुत ज़्यादा शक्तिशाली हैं क्योंकि वे परमेश्वर के जैसा स्वरूप रखते हैं''।

अर्थ की खोज

मंगल ग्रह पर जीवन की खोज करने की इच्छा से नासा (NASA) दूसरे अन्य ग्रहों पर भी जीवन की खोज करने में लगा है। SETI (सर्च फॉर एक्स्ट्राटैरिट्रिएल इन्टेलीजेन्स), (जमीन पर रहने वाले पृथ्वी वासियों से अधिक बौद्धिक क्षमता के लोगों की तलाश) के अभियान के अन्तर्गत SETI ने बड़े बड़े विशाल रेडियो तरंगों को ग्रहण करने वाले रिसीवरों को पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले सौर मण्डल के नौ उपग्रहों की ओर साध लिया है, इस उम्मीद में कि दूसरे अन्य उपग्रहों से बुद्धि की क्षमता के संकेत तरंगों के माध्यम से पृथ्वी पर पहुंचेंगे।

फिल्म 'कॉन्टेक्ट' में, जिसका लेखन और सह-निर्माण कार्ल सागान द्वारा किया गया जिसमें जूडी फोस्टर ने एली एरोवे ने नामक एक युवा वैज्ञानिक की भूमिका अभिनीत की थी, जो कि दूसरे अन्य उपग्रहों पर बौद्धिक क्षमता वाले बुद्धिमान प्राणियों की खोज के सम्मोहन-जाल में फंस जाती है। एक दिन एली जैसे ही रेडियो तरंगो द्वारा सन्देश भेजने वाले यन्त्र को चालू करती है, दूसरे अंतरिक्ष से पढ़ी न जा सकने वाली भाषा में एक गुप्त सन्देश प्राप्त होता है, जिसमें कि एक अंतरिक्ष यान का निर्माण करने की तकनीक का नक्शा उसे मिलता है।

वह इस अज्ञात स्थान की यात्रा करने का फैसला कर लेती है और इस यात्रा को करने के पीछे एकदम वशीभूत सी हो जाती है । इस काम में उसकी ज़िन्दगी को नुकसान पहुंचने का ख़तरा साफ-साफ दिखायी दे रहा है। परन्तु कुछ भी हो, एली को ऐसा लगता है कि कोई ऐसी शक्ति है जो उसे वहां जाने के लिए मजबूर कर रही है और वह अपने को जोखिम में डालकर यहां तक कि मौत का सामना करने को तैयार हो जाती है।

आखिरकार एली गायरोस्कोपिक (गोल-गोल चक्कर काटने वाली सूक्ष्मदर्शी मशीन) के समान लगने वाले इस अंतरिक्ष यान में अकेली ही यात्रा करने वाली यात्री बचती है। और जैसे ही वह अपनी यात्रा आरम्भ करने वाली होती है उसका प्रेमी उसे छोड़कर जाने का कारण उसे बताने को कहता है, वह कहती है,

''मैं किसी किसी चीज़ की तलाश करती चली आ रही हूं..... एक वजह, एक कारण कि हम यहां क्यों मौजूद हैं ? हम यहां क्या कर रहे हैं ? हम कौन हैं, हमारी पहचान क्यों है ?''

इस फिल्म के अन्त में एली यात्रा करते-करते एक ऐसे अंतरिक्ष ग्रह पर पहुंच जाती है जिसका आकार बिगड़ा हुआ है (कीड़ों के बिलों के समान है ।) और यहां उसकी मुठभेड़ ऐसे एलियन्स अर्थात दूसरे ग्रह के वासियों से होती है जो बहुत ही विकसित बौद्धिक क्षमता वाले हैं, लेकिन वह कभी भी अपने आख़िरी उद्देश्य को, जिसकी खोज में वह निकली थी उसे पूरा नहीं कर पाती।

डॉ. ऑस गिनीज़, जो ऑक्सफोर्ड में शिक्षा प्राप्त लेखक हैं, हमारे होने के उद्देश्य और महत्व की खोज करने की हमारी ज़रूरत पर रोशनी डालते हुए कहते हैं :

''बहुत से ऐसे वैज्ञानिक हैं जिन्हें संसार के बारे में इतनी जानकारी है जितना कि विश्वकोष में है, बहुत से ऐसे दार्शनिक हैं जो विचारों की दूर तक फैली हुई प्रणाली का सर्वेक्षण कर सकते हैं..... लेकिन वह सब कुछ सिद्धान्त रूप में होता है और बिना किसी व्यक्तिगत उद्देश्य की समझ के बिना होता है.....''।

''अपने दिल की गहराइयों से, हम सभी उस उद्देश्य को खोजना और पूरा करना चाहते हैं जो हमसे कहीं बढ़कर है। हम में से हरेक के लिए जो असली उद्देश्य है वह व्यक्तिगत है और जोश

से भरा हुआ है : यह जानना कि हमें यहां क्या करने के लिए भेजा गया है और क्यों''।

कहीं न कहीं हम सभी जीवन में सफल होना चाहते हैं तब भी हम में से ज़्यादातर लोग अपनी रोजी-रोटी को कमाने में इतना ज़्यादा व्यस्त हैं कि उन्हें इस बात को सोचने के लिए बहुत ही थोड़ा समय मिल पाता है कि पृथ्वी नामक इस उपग्रह पर हमारी मौजूदगी का क्या महत्व है। कुछ लोग शिक्षा के क्षेत्र में क्या महत्वपूर्ण है, तो कुछ लोगों के लिए एथलेटिक्स, पैसा या अपने व्यवसाय को चुनने की व्यस्तताएं हैं। दूसरे अन्य लोग शोहरत, ताकत और काम-वासना के जुनून का शिकार हैं।

आखिरकार जीवन तो चुनावों की एक श्रृंखला ही है, और उनमें से ज़्यादातर चुनावों पर जीवन के प्रति हमारी व्यक्तिगत धारणाओं का असर पड़ता है, और सबसे ज़्यादा असर तो महत्वपूर्ण रूप से इस बात का पड़ता है कि क्या हम सृष्टिकर्त्ता के होने में विश्वास करते हैं या नहीं।

बेहतरीन ताल-मेल के प्रति प्रतिक्रियाएं

डार्विनवाद को मानने वाले कुछ लोग ईश्वर में विश्वास करने का दावा करते हैं, परन्तु वे जीवन के स्वतः उत्पन्न होने में ही विश्वास करते हैं। डार्विन ने स्वयं ईश्वर में विश्वास करने का दावा किया लेकिन उस ईश्वर में, जिसका जीवन की उत्पत्ति और इसके विकास में कोई हाथ नहीं है। हालांकि जब वे जवान थे तो बाइबिल की बातों में विश्वास करते थे, लेकिन अपने जीवन की मध्य-आयु में पहुंचते-पहुंचते उनका विश्वास टूट गया।

देवताओं की पूजा करने वाले इस बात में विश्वास करते हैं कि ईश्वर ने बड़ी ही आसानी से सृष्टि को गतिमान कर दिया और तब से बिना अपनी दखल अन्दाज़ी के इसको यूं ही चलता रहने के लिए छोड़ दिया है, इसलिए ये लोग जीवन के अर्थ और अन्तिम उद्देश्य को समझे बिना अपना जीवन यूं ही बिताते रहते हैं।

ऐसे लोग जो इस विश्वास के साथ अपना जीवन बिताते हैं कि ईश्वर के बारे में कुछ नहीं जाना जा सकता। उनका मानना है कि यह बिल्कुल सम्भव नहीं है कि ईश्वर के अस्तित्व के बारे में जाना जा सके, इसलिए वे अपना जीवन ईश्वर को माने बिना नास्तिकों के समान बिताते हैं।

ईश्वर को न मानने वाले नील्स एल्डरिज सारांश रूप में इस बात को बताते हैं कि क्यों वह और दूसरे बहुत से वैज्ञानिक जीवन की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अपनी की गयी खोजों के आधार पर किसी अलौकिक शक्ति में विश्वास करने के इच्छुक नहीं हैं:

''स्वयं अपने नियमों के अनुसार चलने के कारण, विज्ञान किसी अलौकिक शक्ति के बारे में कुछ भी कह सकने की इजाज़त नहीं देता''।

ईश्वर को न मानने वाले, नास्तिक विचार धारा के लोग ईश्वर के पाए जाने या होने में बिल्कुल विश्वास नहीं करते ..... यहां तक कि क्वाण्टम यांत्रिकी के बारे में जानने के बाद भी, जो कि अतिरिक्त आयामों का एक अज्ञात संसार है, एक अलग सृष्टि है, हम अब जान चुके हैं कि यह संसार भी हमेशा के लिए नहीं है, इसका भी एक सीमित दायरा है।

ऑक्सफोर्ड में शिक्षित जे. एडविन ओर ने अपने एक विमान-चालक मित्र से उनके नास्तिक होने के वजह के बारे में जांच-पड़ताल करते हुए, उनसे पूछा,

''पहला सवाल-क्या आपको ऐसा लगता है कि आप सब कुछ जानते हैं?'' विमान-चालक ने जवाब दिया ''नहीं'', ''अल्बर्ट आइन्स्टीन कहते हैं कि सारे वैज्ञानिक, कुल मिलाकर, इस ज्ञान के सागर के किनारे पर हैं, अतः मैं भी .... स्वीकार करता हूं कि मैं इन किनारों के किनारे पर खड़ा हूं''। ओर ने पूछा ..... ''इस पूरे के बारे में बात करें तो आप इसका कितना प्रतिशत ! जानते होंगे ..... दस प्रतिशत ?'' विमान चालक ने अचरज से कहा, ''दस प्रतिशत ! नहीं शायद एक प्रतिशत से भी कम''।

ओर ने तब अपने विमान.चालक मित्र से पूछा अपने इस एक प्रतिशत ज्ञान के परे हटकर क्या आप इस बात में विश्वास कर सकते हैं कि ईश्वर का अस्तित्व है ..... इस पर विमान - चालक ने अपनी सहमति जताई। तब ओर ने कहा,

''तब तो आप नास्तिकों में सबसे अनोखे हैं। पांच मिनट पहले आप ने यह कहा कि कोई ईश्वर नहीं है, और अब आप कह रहे हैं कि सम्भव है कि कोई एक ईश्वर हो। आप अपने विवेक से कोई एक फैसला क्यों नहीं लेते ?''

विमान चालक ने फिर से सोचा और यह फ़ैसला किया कि दरअसल, वास्तव में वे ईश्वर में विश्वास नहीं करते और एक नास्तिक कहलाना पसन्द करेंगे।

देवताओं की पूजा करने वाले, ईश्वर को जानने के प्रति विश्वास न करने वाले और ईश्वर को न मानने वाले सभी लोगों को उसी उद्देश्य, प्रेम और महत्व की भूख है जिसकी भूख ईश्वर के मानने वालों को है। ये सब उसी एक बात का सामना कर रहे हैं .....एक भी जवाब ऐसा नहीं है जो सन्तुष्ट कर सके । प्रसिद्ध नास्तिक (अनीश्वरवादी) मडायलेन मुरे ओ हेअर अपनी डायरी में बार-बार एक बात को लिखती हैं :

''कहीं पर, कोई है, जो मुझे प्यार करता है !''

बड़े दुःख की बात है, उनकी ज़िन्दगी में वो प्यार उन्हें नहीं मिल पाया। उनके एक कर्मचारी ने उनका अपहरण किया, बड़ी क्रूरता से उनका कत्ल करके उनके शरीर को बोटी-बोटी करके उन्हें फेंक दिया। हमारे होने के महत्व और हमारी प्यार की चाहत हमारे मानव जीवन की एक ज़रूरत, एक बहुत अहम् हिस्सा है। हमारे दिलों में यह ज़रूरत कहीं न कहीं ऐसे दफ़न है कि अपनी बुद्धि के अनुसार कोई चुनाव करने के बाद भी अपने आपको व्यक्ति सन्तुष्ट नहीं महसूस कर सकता।

रूसी उपन्यासकार एन्ड्री बाइटोव ने अपना अधिकांश जीवन नास्तिकता सम्बन्धी मार्क्सवादी विचारधारा को मानकर बिताया। लेनिनग्राड में एक उदासी भरे दिन में, बाइटोव निराशापन से इतने दुःखी हो गए कि इस निराशा ने उन्हें खुद के बारे में सोचने से परे ले जाकर जीवन के अर्थ को खोजने पर विवश कर दिया। बाइटोव टिप्पणी करते हुए कहते हैं :

''अचानक ही, अपने आप, मेरे मन में एक कहावत आई : 'बिना परमेश्वर के यह जीवन बेकार है'। हैरानी से मैं इसे अपने मन में दोहराता चला गया, और यह कहावत मेरे मन में ऐसे घूमने लगी, मस्तिष्क पर ऐसे छाने लगी जैसे कि मैं घूमने वाली सीढ़ियों पर खड़ा हूं..... और मेरे सामने ईश्वर रूपी उजाला हो गया''।

सन्देह के कारण

विश्वास : किसी न किसी रूप में विश्वास या धारणाएं हम सभी मनुष्यों में होती हैं। परन्तु क्या ईश्वर और विज्ञान के बारे में हमारे मतों या धारणाओं की बुनियाद बुद्धिजीवियों द्वारा बताये गए कारण ही होते हैं, या हमारे ज़मीर से उत्पन्न होने वाली प्रेरणा ? हालांकि ऐसे बहुत से तर्कपूर्ण कारण हैं जो ईश्वर के अस्तित्व के प्रति हमें सन्देह के घेरे में ला खड़ा करते हैं, परन्तु कभी-कभी उन पर ग़लत जानकारियों एवं व्यक्तिगत इच्छाओं के घने काले बादल मंडराते रहते हैं।

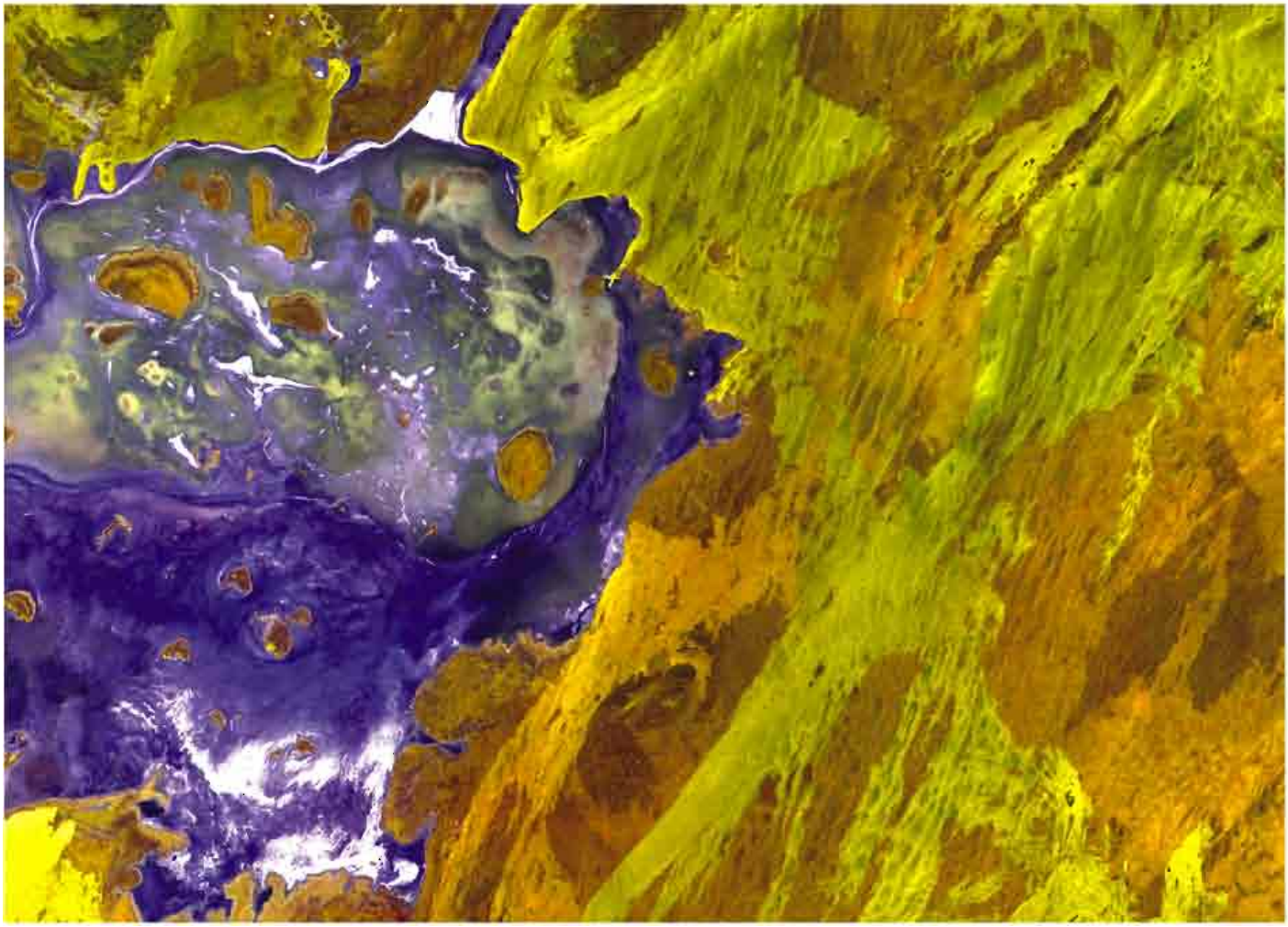

सृष्टि के निर्माण के दिन

एक मुद्दा इस विषय को लेकर विकासवादी विचारधारा वाले लोगों की ओर से उठाया गया था जो बाइबिल में वर्णित परमेश्वर के प्रति सन्देह को उत्पन्न करता है और वह है छह दिनों में सृष्टि के बनाए जाने की घटना का खींचा गया चित्र। मसीही धर्म में विश्वास न करने वालों ने इस बात का संकेत दिया है कि जो कुछ भी वे विश्वास कर रहे हैं उसका आधार प्राचीन सृष्टि और पृथ्वी के बारे में मिले स्पष्ट वैज्ञानिक प्रमाण हैं। इनके इस विवाद का मुद्दा और तर्क यह है कि यदि बाइबिल सृष्टि का निर्माण होने में लगे समय के अन्तराल को बताने में ग़लत है, तो अवश्य ही यह दूसरी अन्य बातों को बताने में भी गलत है।

हालांकि कुछ धर्म-शास्त्रियों का यह मत है कि इब्रानी भाषा में दिन के लिए जो शब्द 'योम' प्रयोग किया गया है उसका मतलब 24 घण्टे का समय होना चाहिए, दूसरे अन्य लोगों का यह मत है कि दिन शब्द किसी ख़ास समय काल की ओर संकेत नहीं करता है। इब्रानी भाषा से लिए गए शब्द 'योम' का अर्थ किसी ख़ास या मापे जा सकने वाले समय-काल से नहीं है, हालांकि सामान्यतः यह 24 घण्टे के समयान्तराल के लिए प्रयोग किया जाता है।

महान मसीही शिक्षार्थी फ्रांसिस शॅफ़र इस बारे में टिप्पणी करते हुए कहते हैं :

''सामान्य रूप से हमारे सामने जो तथ्य है कि इब्रानी भाषा में (जैसा कि अंग्रेज़ी में) 'दिन' का अर्थ तीन- अलग अलग अर्थों में प्रयोग किया जाता है : जिनका अर्थ है (1) 24 घण्टे का समय (2) 24 घण्टे के समय में वह अन्तराल जिसमें उजाला रहता है, और (3) एक ऐसा समयान्तराल जिसकी गणना नहीं की जा सकती।

इसलिए हमें 'उत्पत्ति' में वर्णित 'दिन' के बारे में संकेत दिया गया है, उसके समय-मापन के परिमाण को लेकर फिलहाल कोई फैसला नहीं करना है। इब्रानी भाषा के अनुसार इस शब्द के अर्थ का अध्ययन करने के बाद, यह स्पष्ट नहीं होता है कि इसके कौन से अर्थ को प्रयोग में लाया गया है, यह कोई सा भी अर्थ हो सकता है''।

हालांकि बाइबिल में विश्वास करने वाले समझदार मसीही लोग इस मुद्दे पर कि परमेश्वर ने सृष्टि का निर्माण करने में जो समय लिया उसकी गणना की जानी चाहिए या कैसे उसे मापा जाना चाहिए, इस मुद्दे पर अपनी सहमति न जताने के लिए वे पूरी तौर से सहमत हैं। विश्वास में बने रहने के आवश्यक सिद्धान्त और पवित्रशास्त्र का पूरी तरह से सिद्ध होने के ऊपर प्रभावशाली समझौते हो चुके हैं। इस विवाद का गहराई से अध्ययन करने के लिए, पाठको को 'द जेनेसिस डिबेट : थ्री व्यूज़ ऑन द डेज़ ऑफ क्रियेशन', क्रुक्स प्रेस, आई एन सी, पढ़ने की सलाह दी जाती है। अनुक्रमणिका 'अ' पर भी ध्यान दें।

व्यक्तिगत उद्देश्य

ईश्वर के अस्तित्व पर सन्देह करने के जो व्यक्तिगत उद्देश्य हैं वे स्पष्ट रूप से भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। ईश्वर के अस्तित्व को लेकर कुछ लोग अपनी राय अपने जीवन के दुःख भरे एवं कड़वे अनुभवों के आधार पर कायम कर सकते हैं। उनकी धारणा है कि प्रेमी परमेश्वर को अपने लोगों के बीच अपना हस्तक्षेप करना चाहिए और दुखों से, परेशानियों से छुटकारा देना चाहिए। सी एन एन की स्थापना करने वाले टेड टर्नर ने सार्वजनिक रूप से यह कहा कि उनकी बहन की असमय मृत्यु से उनके जीवन में ऐसा मोड़ आया कि उनका विश्वास टूट गया।

दूसरे कुछ लोग ईश्वर में विश्वास करने से स्वतन्त्र रहना पसन्द करते हैं, वे अपने जीवन में उसकी मध्यस्थता नहीं चाहते ताकि वे आज़ादी से बिना किसी बन्धन में बन्धे अपना जीवन जी सकें और ठीक उसी तरह सोच सकें जैसा वे सोचना चाहते हैं।

कुछ वैज्ञानिकों ने परमेश्वर के विषय में अपने व्यक्तिगत सन्देहों को अपने भीतर इस तरह से उत्पन्न किया है और उन्हें इजाज़त दी है कि वे उनके वैज्ञानिक नज़रिये पर असर डाल सकें।

कार्ल सागान ने तो डार्विनवाद और प्रकृतिवादी विकास की विचारधारा को अपनी बहुचर्चित पी बी सी टेलीविजन श्रृंखला 'कॉसमॉस' जो चालीस करोड़ से भी ज़्यादा दर्शकों द्वारा देखी गई है, के ज़रिये से ख्याति प्राप्त होने का दर्जा दिया है।

सागान की वैज्ञानिक विचारधारा और पृथ्वी पर निवास करने वालों से अधिक बौद्धिक क्षमता वाले जीवन की खोज करने के उनके उन्माद; दोनों बातों पर उनके विश्वास के टूटने का गहरा प्रभाव नज़र आता है। सागान की जीवनी लिखने वाले लेखक की डेविडसन कहते हैं:

''कार्ल सागान ने तो धार्मिकता को बहुत कम आयु में ही छोड़ दिया था..... पृथ्वीवासियों से बेहतर बौद्धिक क्षमता वाले प्राणियों की खोज करने के लगातार बढ़ते जा रहे उनके इस उन्माद की वजह से ही उनके विश्वास से दरार पड़ी और वह टूट गया। जीवन की उत्पत्ति और दूसरी अन्य बातों में भी में किसी ईश्वरीय शक्ति के होने के हरेक बयान को उन्होंने बिल्कुल ही नकार दिया

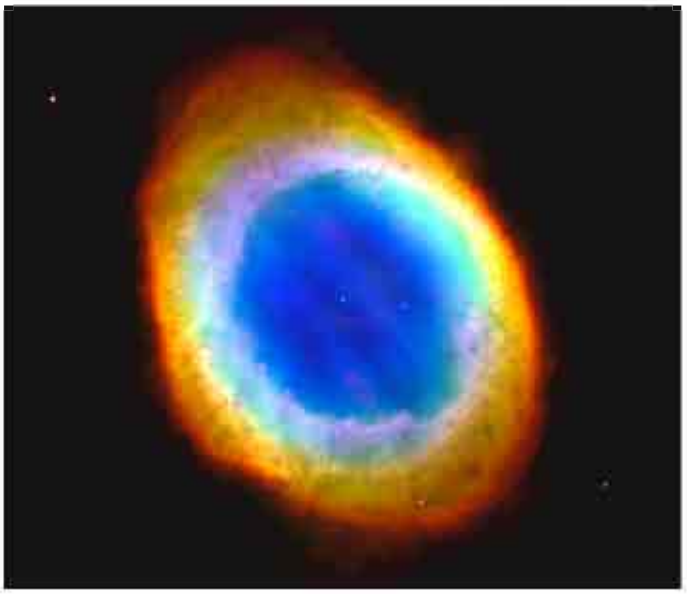

था। अत: उन्हें इसके पीछे किसी वैज्ञानिक कारण को खोजकर दुनिया के सामने लाने की ज़रूरत पड़ी''।

ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास न करने वाले एलडॉस हक्सले प्रकृतिवाद को अपनाने के अपने उद्देश्यों को गहरी नैतिकता का आधार बताते हुए स्वीकारते हैं कि; ''मेरे पास जो उद्देश्य है, उन में इस बात की इच्छा नहीं शामिल है कि संसार अपने होने के अर्थ को उसमें खोजे; नतीजतन अनुमान लगाया गया है कि इसमें कोई भी ऐसा नहीं था..... खुद मेरे लिए, अर्थहीन होने के सम्बन्ध में दार्शनिक विचार यह था कि यह एक ऐसे उपकरण के समान है जो आज़ादी, सेक्स की भावना और राजनीति को लाभ पहुंचाता है''।

प्रमुख दार्शनिक एवं लेखक रवि ज़र्कयाह बहुत से लोगों द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को नकारने के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं :

''कोई भी मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व को न तो बौद्धिक क्षमता की मांग के आधार पर और न ही प्रमाणों की कमी के आधार पर ठुकराता है। एक मनुष्य ईश्वर को केवल नैतिकता का विरोध करने के उस उद्देश्य की वजह से नकारता है जो उसे उसके जीवन में ईश्वर की उपस्थिति को स्वीकार करने के लिए प्रेरित नहीं करता''।

सागान और हक्सले दोनों उस श्रेष्ठ बुद्धि का उदाहरण हैं जिसने उन्हें अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोणों को अपने अनुसार चुने गए धार्मिक विश्वासों और जीवन-शैली के साथ सामंजस्य बिठाने के लिए तर्क-शक्ति को विकसित करने योग्य बनाया।

उपलब्ध प्रमाण

चाहे जो हो, कुछ लोग तो ऐसे हैं ही जिन्होंने बड़ी आसानी से ईश्वर के अस्तित्व को मानने से इन्कार कर दिया है क्योंकि वे इस बात में बिल्कुल विश्वास नहीं करते कि उसके (ईश्वर) अस्तित्व को लेकर पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं। आप कह सकते हैं, ''मैं ईश्वर में विश्वास करना चाहूंगा, यदि इस बात के पर्याप्त प्रमाण मौजूद हों कि उसका अस्तित्व है लेकिन मैं उसके अस्तित्व को केवल 'अन्धे विश्वास' की बुनियाद पर नहीं स्वीकार करना चाहूंगा''।

कोई भी जिसने इस बेहतरीन ताल-मेल के मिले प्रमाणों को गहरी रुचि के साथ जांचा-परखा हो तो वह इसे 'अन्धा विश्वास' हरगिज़ नहीं कर सकता।

हम अपनी ज़िन्दगी जीते हैं और अपनी इस पूरी जीवन यात्रा के दौरान हम अपने फ़ैसले अपने विश्वास के आधार पर ही लेते हैं। चाहे हम एक सुनसान सड़क पर गाड़ी चला रहे हों, एक हवाई जहाज़ में उड़ान भर रहे हों या किसी लिफ्ट में हों, इन सारी बातों में विश्वास करने की ज़रूरत पड़ती है। यदि हमारे पास इस बात के पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं कि जो हवाई यात्रा हम करने जा रहे हैं, वह सुरक्षित है तो हम अपनी जान जोखिम में डालकर उड़ान भरते हैं, हालांकि तब भी हमारे जो फ़ैसले होते हैं उसमें हमारी पूरी जानकारी शामिल नहीं होती है।

आख़िरकार ईश्वर में आस्था हमारे चुनाव पर निर्भर करता है। ली स्ट्रोबेल, जो शिकागो ट्रिब्यून के भूतपूर्व सम्पादक हैं और जिन्हें पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, उन्होंने अपनी व्यक्तिगत जांच पड़ताल का एक अभियान यह जानने के लिए चलाया कि क्या ईश्वर में विश्वास करने के लिए पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं। स्ट्रोबेल अपनी इस तलाश की तह तक इन नतीजों के आधार पर पहुंचे :

''आख़िरकार, दरअसल, विश्वास के होने से यह ज़ाहिर नहीं होता कि हमारे पास ठोस और खरे जवाब मौजूद हैं ..... कुछ भी हो, हमने जीवन के दूसरे अन्य क्षेत्रों में नतीजों पर पहुंचने के लिये किसी ऐसे ठोस सबूतों की मांग नहीं की जो हमें ठोस नतीजे पर पहुंचा सकें। परन्तु सवाल यह है कि ज़रूरी है कि हम जिस ईश्वर के अनुसार काम करना चाहते हैं उसके अस्तित्व के बारे में हमारे पास पर्याप्त प्रमाण हों''।

ईश्वर में विश्वास न करने वाले नास्तिक विचारधारा वाले इस भूतपूर्व व्यक्ति के कानूनी तौर से प्रशिक्षित दिमाग ने जिस बात पर लोगों को राज़ी करने की कोशिश की; वह था प्रमाणों को जुटाना। बड़े ही हैरतअंगेज़ तरीके से ली ने ऐसे प्रमाणों को खोज निकाला जो विश्वास के मुद्दे को लेकर न सिर्फ़ पर्याप्त एवं महत्वपूर्ण थे बल्कि दिलचस्प भी थे।

अध्याय दो में खगोल शास्त्री एडवर्ड हेरीसन द्वारा की गयी उस टिप्पणी को दोहराते हैं, जिसके अनुसार बहुत से ऐसे वैज्ञानिक हैं जो यह मान चुके हैं कि सृष्टि एक ख़ास बौद्धिक क्षमता द्वारा की गयी रचना की देन है :

''यहां परमेश्वर के अस्तित्व के होने के खगोल शास्त्रीय प्रमाण मौजूद हैं ..... बहुत से वैज्ञानिक, जब उन्होंने अपने विचारों को समर्थन के रूप में प्रस्तुत किया, तो उनका झुकाव..... सृष्टि के आकार को मुद्दे के रूप में प्रस्तु करना था''।

लेकिन, जबकि हम यह बात मान चुके हैं कि सृष्टि की इस शक्ल के बारे में जो वैज्ञानिक प्रमाण मिला है, वह दिलचस्प है तो क्या कोई ऐसा भी प्रमाण हमारे पास मौजूद है जो हमें यह बात समझने से हमारी मदद कर सके कि ईश्वर का स्वरूप कैसा है, और, उसने हमें क्यों बनाया ?

अन्तिम उद्देश्य

यदि हमारी सृष्टि के इस बेहतरीन ताल-मेल के पीछे किसी की सर्वश्रेष्ठ बौद्धिक क्षमता का हाथ है, तो आपके लिये ज़रूर हैरत की बात होगी,

''क्या वह हमारे समान है, उसके हमारे आपसी सम्बन्ध हैं?'', ''क्या वह मेरा नाम जानता है?'', ''मैं अपने जीवन का उद्देश्य कैसे खोज सकता हूं?''

सृष्टि का और पृथ्वी का यह बेहतरीन ताल-मेल हमें उसके बारे में क्या बताता है ? उसके अस्तित्व और स्वभाव को जानने की कठिनाई की समस्या का हल करने वाले सूत्रों की खोज करके आइए, हम जीवन के अर्थ एवं उद्देश्य की वह तक पहुंचने के अपने इस अभियान को शुरू करें।

पहला सूत्र : यह बेहतरीन ताल-मेल बेहतर ताल-मेल बिठाने वाले एक सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है।

यह बेहतरीन ताल-मेल तर्कों के आधार पर बेहतर रूप से ताल-मेल बिठाने वाले एक सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है, जिसका मतलब है एक ऐसे व्यक्तित्व से, जिसके गुणों को अन्तरिक्ष समय का पालन करने वाले इन चार आयामों में सीमित नहीं किया जा सकता है। यह भविष्यवाणी सामान्य सापेक्षता के सिद्धान्त पर आधारित आइन्स्टीन के सिद्धान्तों की है।

कल्पना करें कि कुछ भी नहीं है, शून्य है। उसके बाद कल्पना करें कि एक विस्फोट होता है जिसकी वजह से हमारी सृष्टि, जो अपने अन्दर सारे पदार्थों और ऊर्जा को, सर्वज्ञ जानने वाले ि

वज्ञान के सभी नियमों को समय और अन्तरिक्ष को समेटे हुए है, उत्पन्न हो जाती है। आइन्स्टीन के अनुसार, सृष्टि की उत्पत्ति होने के पीछे कोई न कोई वजह ज़रूर रही थी।

अध्याय 1 में वर्णित खगोल भौतिक शास्त्री जार्ज स्मूट की टिप्पणी को याद करें :

''इसमें कोई शक नहीं कि बिग बैंग के अनुसार सृष्टि एक घटना है और मसीही विश्वास के अनुसार सृष्टि बिना किसी पदार्थ के रची गयी है, दोनों ही बातें एक ही जैसी हैं''।

केवल एक सर्वश्रेष्ठ बुद्धि वाला सृष्टिकर्त्ता ही बिना किसी पदार्थ के सृष्टि का निर्माण कर सकता है।

दूसरा सूत्र : बेहतरीन ताल-मेल असीमित शक्ति की ओर संकेत करता है -

10 करोड़ अरबों खरब तारों, विशालकाय अन्धकूपों और दस लाख खरब सूर्यों की अद्‌भुत रोशनी से अन्तरिक्ष को प्रकाशमान करने वाले अद्‌भुत क्वासरों को एक साथ मिलाकर सृष्टि का निर्माण करने के लिए ऐसी शक्ति चाहिए थी जो हमारी कल्पना से परे है।

खगोल शास्त्री हग रॉस इस बात का खुलासा करते हैं कि हमारे इस चार आयामों वाले अन्तरिक्ष काल पर ईश्वर की शक्ति को किसी दायरे में बान्धने का भार थोपना सम्भव नहीं है। जिस भी सीमा में रहकर हमने उसकी शक्ति को जाना है, हम उसकी उसी शक्ति को ग्रहण कर सकते हैं। इस सर्वश्रेष्ठ सृष्टिकर्त्ता की शक्ति का ऐसा कोई दायरा सा सीमा नहीं है अतः उसकी शक्ति असीमित है।

तीसरा सूत्र : बेहतरीन ताल-मेल सर्वश्रेष्ठ अधिकार की ओर संकेत करता है।

सृष्टि के सारे कायदे-कानून, जिसमें अतिरिक्त आयामों और क्वाण्टम यांत्रिकी की अनिश्चितता के गूढ़ रहस्य भी शामिल हैं, सृष्टिकर्त्ता द्वारा बनाये गए सिद्धान्तों एवं नियमों के अधिकार में रहकर चलते रहते हैं।

आइज़ेक न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त की खोज की, आइन्स्टीन ने पदार्थों और ऊर्जा के स्वभाव के बारे में भविष्यवाणी की, जिन्होंने पहले परमाणु बम के विस्फोट के समय साबित कर दिया कि ये भविष्यवाणियां सच्ची हैं। हमारा यह जो संसार है, इन्हीं भौतिक नियमों के अनुसार चलता है।

कुछ लोगों ने इन अधिकारों के लिए बनाए गए पुलों को छलांग लगाकर या इन अधिकारों के मोड़ पर अपने विचारों की गाड़ी को बहुत तेज़ भगाने की कोशिश करके, इन अधिकारों को चुनौती देने की कोशिश भी की है, लेकिन प्रकृति के लिए जो नियम सृष्टिकर्त्ता द्वारा स्थापित किये गए हैं और जिनका उल्लघंन करना उचित नहीं है उनको न मानने की उलझनें भी हमेशा से पेश आती रही हैं।

चौथा सूत्र : बेहतरीन ताल-मेल असीमित ज्ञान की ओर संकेत करता है।

आइन्स्टीन इस सृष्टि की रचना के पीछे छिपे गूढ़ ज्ञान पर गहराई से अपने विचार व्यक्त करते हैं,

''उस सर्वश्रेष्ठ शक्ति का जो ज्ञान है, उसकी तुलना अगर, मनुष्यों में बड़े ही व्यवस्थित ढंग से सोचने-समझने की शक्ति और उनकी कार्यप्रणाली से की जाए तो यह तो सिर्फ़ एक झलक है, उसके ज्ञान की जिसका कोई महत्व नहीं है''।

इस बेहतरीन ताल-मेल के पीछे छुपे ज्ञान, क्वाण्टम यांत्रिकी, डी एन ए और मानव मस्तिष्क के विकास के पीछे छुपे ज्ञान पर जब हम रोशनी डालते हैं, तब हम आइन्स्टीन के विचारों के मतलब को समझना शुरू कर देते हैं।

जैसा कि प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री फ्रैड हाइल का विचार है कि :

''प्रस्तुत तथ्यों या प्रमाणों का साधारण अर्थ जो है, वह इस बात की ओर इशारा करता है कि सर्वश्रेष्ठ बुद्धिवाले इस व्यक्तित्व ने भौतिकी, रसायन और जीव विज्ञान का भी..... मज़ाक बनाकर रख दिया है''।

ईश्वर को इस चार आयामों वाले अन्तरिक्ष काल के दायरे में नहीं बान्धा जा सकता, इस हक़ीकत ने ज्ञान से भरे एक नये संसार और हमारे समझने की क्षमता से परे जो असीमित शक्ति है, उसका ख़ुलासा कर दिया है।

असीमित ज्ञान से भरपूर ऐसे सृष्टिकर्त्ता के बारे में यह विचार है कि वह अपने द्वारा रचे गए इस संसार के हर एक पहलू को जिसमें हमारे विचार, काम और बहुत ही गहरे उद्‌देश्य शामिल हैं, सबको भली भांति जानता होगा और क्योंकि समय-काल के दायरे से बाहर है तो वह हमारे भविष्य के बारे में भी जानता होगा।

पांचवां सूत्र : बेहतरीन ताल-मेल एक योजनाबद्ध उद्‌देश्य की ओर संकेत करता है।

क्या सृष्टिकर्त्ता की उपस्थिति के बिना इस जीवन का कोई अर्थ और उद्‌देश्य हो सकता है ? नास्तिकवादी विचारधारा वाले खुलकर बोलने वाले दार्शनिक बर्ट्रेण्ड रसेल इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि :

''जब तक आप ईश्वर के अस्तित्व को मान नहीं लेते, तब तक जीवन के उद्‌देश्यों पर सवाल उठाना बेकार है''।

गणितज्ञ रॉजर पेनरॉस, जिन्होंने स्टीफन हॉकिंग के साथ मिलकर समय की उत्पत्ति के सम्बन्ध में गणित की परिकल्पनाओं पर आधारित प्रमाणों को जुटाने के लिए कार्य किया, इस बात का खुलासा करते हैं कि :

''मैं यह कहना चाहूंगा कि इस सृष्टि के पाये जाने के पीछे एक उद्‌देश्य छिपा है। यह सब कुछ किसी आकस्मिक घटना से ही नहीं उत्पन्न हो गया है''।

अपने आपको सही साबित करने वालों में, पेनरॉस ही अकेले व्यक्ति नहीं है। सृष्टि के इस बेहतरीन ताल-मेल को देखकर वैज्ञानिकों के दिमाग के भी परखच्चे उड़ गए हैं और वे उद्‌देश्य के बारे में खुलकर बात करने लगे हैं। लेकिन, जिस प्रश्न का सामना हम और आप कर रहे हैं वह यह है कि,

''उसने मुझे क्यों बनाया ?..... मुझे बनाने के पीछे उसका क्या उद्‌देश्य है ?''

क्या वह एक ऐसी शक्ति है, जिसका कोई व्यक्तित्व नहीं या फिर क्या उसका और हमारा आपसी सम्बन्ध है ?

छठवां सूत्र : यह बेहतरीन ताल-मेल इस बात की ओर संकेत करता है कि एक ऐसा सृष्टिकर्त्ता है जिसका हमसे आपसी सम्बन्ध है।

हालांकि बहुत से वैज्ञानिकों ने सहमति जताई है कि सृष्टि और पृथ्वी का यह बेहतरीन ताल-मेल हमें एक सृष्टिकर्त्ता के होने के दिलचस्प प्रमाणों की मौजूदगी का अहसास कराता है, कुछ लोग ऐसे हैं जो इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि वह एक

ऐसी शक्ति है जिसका कोई व्यक्तित्व नहीं है और वे उसे (सृष्टिकर्त्ता) को मानवीय गुणों से सजे व्यक्तित्व के रूप में नहीं स्वीकारते। परन्तु इस प्रकार की धारणाओं का आधार क्या है? यह कैसे सम्भव है कि कोई एक ऐसी शक्ति जिसका कोई व्यक्तित्व नहीं है, हमारे जैसे मानवीय गुणों से युक्त, आपसी सम्बन्ध रखने वाले प्राणियों की रचना करे।

फ्रांसिस शॅफर स्वीकार करते हुए कहते हैं:

''आज तक कभी भी किसी ने भी इस बात को प्रदर्शित नहीं किया कि कैसे..... एक ग़ैर-व्यक्तित्व वाली शक्ति, सृष्टि की बुनियादी परन्तु पेचीदा ज़रूरतों का निर्माण कर सकती है, यहां पर मनुष्य के व्यक्तित्व का ज़िक्र करने की तो ज़रूरत ही नहीं रह जाती''।

शॅफर लगातार मनुष्य द्वारा अपने अर्थ को खोजने की जन्मसिद्ध आवश्यकता के कारणों पर बात करते हैं, जिसे जानने के लिए एक ऐसे ईश्वर की ज़रूरत है, जिसका हमसे सम्बन्ध हो, जो व्यक्तिगत हो:

''इस आधुनिक युग के मनुष्य की जो दिमागी उलझन है उसे समझना बहुत आसान है: वह यह नहीं जानता कि मनुष्य के होने के पीछे क्या मतलब छुपा हुआ है। वह भटक रहा है। मनुष्य तो बिल्कुल शून्य है.... लेकिन अगर हम खुद की उत्पत्ति के बारे में बात करना शुरू करें और यह मान लें कि दूसरी अन्य चीज़ों की उत्पत्ति भी हमारे लिए हुई है तो व्यक्तिगत शब्द का अर्थ समझ में आता है और तब मनुष्य और उसकी खोज करने की लालसा बेकार नहीं लगती है''।

अप्रैल 1994 में कर्ट कोबेन जो कि लोक मर्यादा से डरने वाले रॉक संगीत के मशहूर गायक थे और जिन्होंने निर्वाण संस्था की नींव डाली थी, उन्होंने 27 वर्ष की उस उम्र में जहां उनकी लोकप्रियता अपने शिखर पर पहुंच चुकी थी, अपने ही हाथों से अपनी जान ले ली। उनकी आत्महत्या से लोगों को यह सन्देश मिला कि यह शोहरत, अच्छी किस्मत और उनकी उपलब्धियां उनकी उस गहरी भूख और ज़रूरतों को पूरा करने में नाकाम रहीं, जिनकी अपने जीवन में उन्हें ज़रूरत थी।

हम सभी अपने-अपने जीवनों में जीवन के अर्थ और उद्देश्यों की इस गहरी भूख को शान्त करने की तलाश में हैं। चौथी शताब्दी के विचारक ऑगस्टीन, जिन्हें अब तक के सबसे बुद्धिमान व्यक्तियों में से एक माना जाता है, वे अपने सृष्टिकर्त्ता में आजकल के मनुष्यों के अन्तिम उद्देश्य को पाते हैं:

''तुमने हमें अपने लिए बनाया है, और हमारे दिलों को तब तक सुकून नहीं मिलता जब तक कि वे तुम्हारी शरण में न आ जाएं''।

इसके बावजूद भी, जब तक कि यदि सृष्टिकर्त्ता तक हमारी पहुंच न हो और वह हमसे अर्थपूर्ण तरीके से बात-चीत न करे और हमसे आपसी सम्बन्ध न बनाए रखे, हमें जीवन में निराशा का सामना करना पड़ता है। हमें उससे बातें करने की ज़रूरत है जो हमारे जीवन के अर्थ और उद्देश्य के हमारे सवालों का जवाब दे सकता है..... वह जिसने हमें बनाया है।

सातवां सूत्र: यह बात तर्क करने लायक है कि वह सृष्टिकर्त्ता जो हमसे आपसी सम्बन्ध रखता है, हमारे होने के उद्देश्य के बारे में हमसे बात करेगा।

हमने अध्याय 4 में हमने मस्तिष्क की तुलना जीवन को बनाए रखने वाली दूसरी अन्य बनावटों से करने के बाद इनकी दूर तक फैली विशिष्टताओं को जाना है। हमने अपनी चेतना के उस गहरे रहस्य को भी जांचा-परखा है, जिसने बहुत से जोशीले विकासवादियों को भी हैरत में डाल दिया, जिसमें रिचर्ड हॉकिन्स भी शामिल हैं, जो चेतना के बारे में जानकर हतप्रभ रह गए।

''ऐसा मेरे ही साथ क्यों हुआ, कि आधुनिक जीव विज्ञान को सबसे ज़्यादा उलझे हुए रहस्य का सामना करना पड़ रहा है''।

हम किताबें पढ़ते हैं, फिल्में देखते हैं, मोबाइल फोन पर बातें करते हैं और अपने दिल के राज़ उन लोगों को बताते हैं जिन्हें हम सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं। इसलिए, जबकि हमें शब्दों में बात करने की ख़ासियत के साथ बनाया गया है, तो इस बात पर भी तर्क किया जा सकता है कि वह अद्भुत बुद्धि वाला, जिसका हमारे जीवनों को बताने का एक उद्देश्य है; वह सृष्टिकर्त्ता भी हमसे शब्दों के माध्यम से बात करेगा।

इस सन्देश को प्रमाणित करना

हमने इस बात को जांचा-परखा है कि बाइबिल के अनुसार सृष्टि के बिना किसी पदार्थ की सहायता के रचे जाने की बात; जो भी नतीजे वैज्ञानिकों ने खोज निकाले हैं उससे मेल खाती है। हमने इस बात को जाना है कि जिस सृष्टि और परमेश्वर को बाइबिल में प्रस्तुत किया गया है, वह समय की सीमा से परे है। वह एक ऐसा ईश्वर है जो सबसे शक्तिशाली है, जो सब कुछ जानता है, जिसका सम्पूर्ण पृथ्वी पर अधिकार है और जो हमसे आपसी सम्बन्ध रखता है।

परन्तु क्या बाइबिल वैज्ञानिक और ऐतिहासिक तौर पर अद्भुत है? परन्तु मसीही धर्म में विश्वास न करने वाले बहुत से लोग बिना सच्चाई से बाइबिल की जांच-पड़ताल करे, इसको किवन्दंतियों अर्थात् दूसरों से ली गई जानकारी पर आधारित मानकर ठुकरा देते हैं।

मसीही धर्म में विश्वास न करने वाले बहुत से लोगों ने पेश किये गए प्रमाणों की व्यक्तिगत रूप से जांच-पड़ताल की है। इस विषय पर अध्ययन कर रहे बहुत से शिक्षार्थियों ने ऐसे प्रमाणों की उम्मीद की है जो या तो बाइबिल की विश्वसनीयता को लेकर उनके सन्देहों की पुष्टि करते हों या फिर उन्होंने सामूहिक रूप से इसे नकार दिया है।

नास्तिकवादी होने के कारण, जोश मैकडॉवेल महाविद्यालय में वाद-विवाद करने वाले दल के नेता रहे, वे मसीहियत और बाइबिल के मामले में मसीही धर्म में विश्वास नहीं करते थे। उनका विचार था कि बाइबिल नैतिक शिक्षा देने वाली कहानियों और बच्चों को सुनाई जाने वाली कहानियों से भरपूर है, हालांकि उन्होंने कभी भी व्यक्तिगत रूप से इसकी वास्तविकता को न ही जानने की कोशिश की और न इसे स्वयं कभी पढ़ा।

जोश का विचार रहा कि मसीही लोग ऐसे हैं ''जिनके पास दिमाग नहीं है'' और बाइबिल एवं इसके मतों के विरोध में उन्होंने काफी बहस की, जब तक कि उन्हें इस बात की चुनौती नहीं मिल गयी कि वे खुद ही प्रस्तुत किये गए प्रमाणों को जांचे-परखें। जोश इस बारे में टिप्पणी करते हैं कि:

''मैंने यह सोचा कि यह सब एक ढोंग है। दरअसल, मैंने यह सोचा कि ज़्यादातर मसीही लोग मूर्खों के समान चहलकदमी कर रहे हैं..... लेकिन ये लोग मेरे लिए चुनौती बन गए..... और आखिर में मुझे इनकी चुनौतियां स्वीकार करनी पड़ीं..... मैं नहीं जानता था कि इसके ठोस प्रमाण भी मौजूद हैं। मैं नहीं जानता था कि इस बात के भी प्रमाण मौजूद हैं कि किसी व्यक्ति का

विकास भी हो सकता है''।

तब जोश ने अपनी खोज; बाइबिल और यीशु के दावों को ग़लत साबित करने की लिए शुरू की। सालों साल तक शिक्षार्थी की तरह पढ़ाई करने के बाद उन्होंने 'मोर दैन ए कारपेन्टर,' और 'एविडेन्स दैट डिमाण्डस् ए वर्डिक्ट' लिखीं जो बाइबिल की घटनाओं के ऐसे विश्वसनीय प्रमाणों को प्रस्तुत करती हैं, जो हैरत में डाल देने लायक हैं। (अगली पुस्तिका में हम इन प्रमाणों की खोज-बीन करेंगे।)

''उसके होंठ ख़ामोश नहीं हैं''

शॅफर इस बात का नतीजा निकालते हैं कि ईश्वर हमसे बातचीत करता रहा है, और वह हमें बताता है कि इस सृष्टि में हमारी ज़रूरत जानने के लिए हमें क्या करना है :

''अतः तीन बातें हमारे सामने खुलकर आती हैं : परमेश्वर, असीमित शक्ति वाला- हमसे आपसी सम्बन्ध रखने वाला परमेश्वर, जिसने इस सृष्टि की रचना की; मनुष्य, जिसे उसे इस सृष्टि में रहने के लिए बनाया; और बाइबिल, जिसे उसने हमें इसलिए दिया ताकि हम इस सृष्टि के बारे में जान सकें..... जो हमें यह बता सके कि हम अपने प्रश्नों के उत्तर कैसे जानें''।

जब यूनानी दार्शनिक किसी वस्तु के नाम के बजाय उससे सम्बन्धित कोई सन्देश या ख़ास विचार पहुंचाना चाहते थे तो वे 'लोगोज़' शब्द का इस्तेमाल करते थे। दरअसल 'लोगोज़' का अर्थ होता है, अपनी दिमागी ताक़त को ज़ाहिर करना।

कोई भी व्यक्ति ऐसे परमेश्वर को चाहता है जो उससे बातचीत करे, उसके बारे में गहराई से सोचे और अपनी सोच को उसे बताए, जो हमें यह बता सके कि हमें उसके बारे में जानने के लिए क्या करने की ज़रूरत है और इसके साथ ही यह भी बता सके कि हमारे जीवनों के प्रति उसकी क्या योजना है। लेकिन यदि वह अपने आपको हम पर प्रकट करे, तो हमारे पास क्या सुबूत होना चाहिए कि यह सन्देश उसी के द्वारा हम तक पहुंचा है। अतः बहुत सी आवाज़ों के बारे में दावे किये गए हैं कि यह परमेश्वर की आवाज़ है.... हम यह कैसे जानें कौन सी उसकी आवाज़ है, और यदि है, तो क्या यह उसकी ही आवाज़ है ?

चश्मदीद गवाहों की गवाही

अदालत में किसी अपराध का जब मुकद्मा चल रहा होता है तो चश्मदीद गवाह की गवाही को सबसे ठोस और विश्वसनीय सबूत माना जाता है। लेकिन क्या हमारे इस कमज़ोर मुकद्मे की जांच पड़ताल के लिए हमारे पास कोई चश्मदीद गवाह मौजूद है ? क्या हमारे पास कोई ऐसा भरोसेमन्द चश्मदीद गवाह मौजूद है ? क्या हमारे पास कोई ऐसा भरोसेमन्द चश्मदीद गवाह है जो उन प्रमाणों के साथ खुलकर हमारे समाने आया हो जो हमें सृष्टिकर्त्ता के बारे में बताते हों..... कौन है वह..... और उसकी हमारे लिए क्या अहमियत है ?

लगभग 2000 साल पहले एक ऐसा व्यक्ति हुआ जिसका यह दावा था कि उसके पास जीवन से सम्बन्धित सारे सवालों के जवाब हैं। जो परमेश्वर और मनुष्य के बारे में अधिकारपूर्वक बोलता था और जिसका जीवन दूसरे मनुष्यों के समान नहीं था। इस बात की जानकारी मिलती है कि उसने पानी को दाखरस में बदल दिया, अन्धों को चंगा किया यहां तक कि मुर्दों को भी ज़िन्दा कर दिया। उसकी सुधारवादी और नयी-नयी बातों ने उसे आख़िरकार मौत की सज़ा सुनवा दी; कुछ भी हो, उसके फिर से जी उठने और पुनरुत्थान प्राप्त करने की घटना ने, उसके पीछे चलने वालों और उसकी बातों को मानने वाले उसके अनुयायियों की हिम्मत ऐसी बढ़ाई कि उन बातों की शुरुआत हुई, जिसे आगे चलकर इस विश्व के इतिहास में सबसे बड़ा क्रान्तिकारी आन्दोलन माना गया।

उसके इस ग्रह पृथ्वी को छोड़कर चले जाने के ज़ल्द बाद ही उसके सबसे करीबी दोस्तों में से एक ने उसके बारे में यह लिखा कि वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने अपने पीछे चलने वाले अपने अनुयायियों को बड़ी तादाद में इकट्ठा कर लिया था। यहां उन बातों का वर्णन है जो यूहन्ना ने यीशु मसीह के बारे में लिखीं:

''उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था, जिसे हम ने सुना, और जिसे अपनी आंखों से देखा, वरन जिसे हम ने ध्यान से देखा; और हाथों से छुआ। (यह जीवन प्रगट हुआ, और हम ने उसे देखा, और उस की गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं, जो पिता के साथ था, और हम पर प्रगट हुआ)''।

यूहन्ना ने ये बातें यूनानी भाषा में लिखीं, और यीशु मसीह का वर्णन करने में वचन इस्तेमाल किया - द लोगोज़ (एक सांकेतिक प्रतीक)। उसने खुलकर, साहस से भरकर कहा कि यीशु मसीह, द लोगोज़ (सांकेतिक प्रतीक), एक ऐसा व्यक्तित्व रहा है जो मनुष्यों के बीच जीवन के अर्थ एवं उद्देश्य को लेकर चल रहे बहस के मुद्दे के सबसे ज़रूरी और अहम सवाल का जवाब मनुष्य को ज़रूर देगा।

जो सन्देश यीशु मसीह इस संसार के लोगों के लिए लेकर आए, वह विचारों में क्रान्तिकारी बदलाव लाने वाला और गहराई से समझने वाला सन्देश था। इस सन्देश ने हमें एक ऐसे परमेश्वर के बारे में बतलाया जिसने न सिर्फ़ हमें रचा, बल्कि हमसे प्रेम भी करता है, जो हमारे निकट आना चाहता है और जो यह चाहता है कि हम उसे व्यक्तिगत रूप से जानें। लेखक, ए.डब्ल्यू. टोज़र इस बात को खुले दिल से स्वीकारते हैं कि हम इस योग्य हैं कि उसे जान सकें :

''परमेश्वर यहां विद्यमान है। यह सारा संसार उसकी फूंकी गई जीवनदायिनी सांस से जीवित है..... खुद को हम पर प्रगट करने के लिए, हमसे बातचीत करने के लिए, वह हमेशा से हमारा ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश करता आ रहा है। हमारे खुद के भीतर वह योग्यता है कि हम उसकी आवाज़ को सुन सकें''।